आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ज्योतिष आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

डॉ सिद्धार्थ लाटा, सहायक आचार्य (संस्कृत), राजकीय महाविद्यालय, बीदासर

सारांश

कृत्रिम बुद्धि (एआई) कम्प्यूटर विज्ञान की एक शाखा है जो मशीनों और सॉफ्टवेयर को बुद्धि के साथ विकसित करता है। 1955 में जॉन मैकार्थी ने इसको कृत्रिम बुद्धि का नाम दिया और इसे 'विज्ञान और इंजीनियरिंग के द्वारा बुद्धिमान मशीनों को बनाने के रूप परिभाषित किया। कृत्रिम बुद्धि अनुसंधान के लक्ष्यों में तर्क, ज्ञान की योजना बनाना सीखना, धारण करना और वस्तुओं में हेरफेर करने की क्षमता आदि शामिल है। वर्तमान में इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए साख्यिकीय विधियों, कम्प्यूटेशनल बुद्धि और पारंपरिक खुफिया तकनीकी शामिल हैं। कृत्रिम बुद्धि को लेकर दावा किया जाता है कि यह मानव की बुद्धि का एक केंद्रीय संपत्ति के रूप में मशीन द्वारा अनुकरण कर सकता है। वहाँ दार्शनिक मुद्दों के प्राणी बनाने की नैतिकता के बारे में प्रश्न उवाए गए थे। लेकिन आज यह प्रौद्योगिकी उद्योग का सबसे महत्वपूर्ण और अनिवार्य हिस्सा बन गया है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेस की शुरुआत 1950 के दशक में हुई थी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अर्थ है बनाबटी (कृत्रिम) तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता। इसके जरिये कंप्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है. जिले उन्हीं तों के आधार पर चलाने का प्रयास किया जाता है जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क काम करता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जनक जॉन मैकार्थी के अनुसार यह बुद्धिमान मशीनों, विशेष रूप से बुद्धिमान कंप्यूटर प्रोग्राम को बनाने का विज्ञान और अभियांत्रिकी है अर्थात यह मशीनों द्वारा प्रदर्शित किया गया इंटेलिजेस है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कंप्यूटर द्वारा नियंत्रित रोबोट या फिर मनुष्य की तरह इंटेलिजेंस तरीके से सोचने बाला सॉफ्टवेयर बनाने का एक तरीका है। यह इसके बारे में अध्ययन करता है कि मानव मस्तिष्क कैसे सोचता है और समस्या को हल करते समय कैसे सीखता है. कैसे निर्णय लेता है और कैसे काम करता।

कृत्रिम बुद्धि (एआई) का दायरा विवादित है क्योंकि मशीने तेजी से सक्षम हो रही है. जिन कार्यों के लिए पहले मानव की बुद्धिमत्ता चाहिए थी. अब यह कार्य 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दायरे में आते है। उदाहरण को लिए लिखे हुए शब्दों को पहचानने में अब मशीन इतनी सक्षम हो चुकी है कि इसे अब होशियारी नहीं माना जाता है। आज कल, एआई के दायरे में आने वाले कार्य है. इंसानी वाणी को समझना, शतरंज के खेल में माहिर इसानो से भी जीतना, बिना इंसानी सहारे के गाड़ी खुद चलाना।

ज्योतिष

ज्योतिष शास्त्र ग्रहों और नक्षत्रों की गतिविधि का अध्ययन करने वाला शास्त्र है. यह शास्त्र. भविष्य में होने वाली घटनाओं का अनुमान लगाने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है. ज्योतिष के जरिए, ग्रहण, मौसम, त्योहार, और पर्वों के बारे में जानकारी हासिल की जाती है। ज्योतिष को लेकर अलग-अलग लोगों के अलग अलग मत हैं। कुछ लोग इसे अंधविश्वास मानते हैं. जबकि कुछ लोग इसे वैज्ञानिक मानते हैं।

वेद, सनातन धर्म के सबसे पुराने ग्रंथ हैं। वेदों को संसार का आदि ग्रंथ कहा जाता है। वेदों में पुरातन ज्ञान-विज्ञान का मंडार है। वेदों को 'श्रुति भी कहते हैं। वेदों को अपौरुषेय माना जाता है. यानी इन्हें कोई इंसान नहीं लिखा था। वेदों को मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किया गया। वेदों को चार भागों में बांटा गया है ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद । वेदों में देवता ब्रह्मांड, ज्योतिष, गणित, औषधि, विज्ञान, भूगोल, धर्म, संगीत, रीति-रिवाज आदि जैसे कई विषयों का ज्ञान है।

वेदांग -

बेदांग वेदों को समझने और सही उच्चारण करने के लिए विकसित किए गए छह सहायक विषयों का समूह है। वेदांगों में शिक्षा, व्याकरण, छंद. निरुक्त, कल्प, और ज्योतिष शामिल है। शिक्षा में वेद मंत्रों के उच्चारण का तरीका बताया गया है। निरुक्त में वेदों के असामान्य पहलुओं का वर्णन है। कल्प में वेदों में बताए गए कर्मों का विस्तार से वर्णन है। ज्योतिष का मुख्य काम संस्कार और यज्ञों के लिए मुहूर्त तय करना है। वेद के अर्थ व ज्ञान में सहायक शास्त्र वेदांग कहा जाता है। शिक्षा, कल्प. व्याकरण, ज्योतिष, छन्द और निरुक्त ये छ वेदांग है। छन्द को बेदों का पाद, कल्प को हाथ, ज्योतिष को नेत्र, निरुक्त को कान, शिक्षा को नाक, व्याकरण को मुख कहा गया है।

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पक्धते ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते । शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् तस्मात्सांगमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥